ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-1
January-2020

महात्मा गाँधी के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ विष्णु कुमार[1], जय प्रकाश सिह[2]

[1]सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं।

[2]सहायक प्रोफेसर, दूरस्थ शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं।

प्रस्तावना

संसार में अनेक वाणी है मनुष्य सब प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, क्योंकि उसमें बुद्धि व विवेक होता है, बुद्धि व विवेक का विकास शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है, शिक्षा ही मनुष्य को सभ्य व गुणवान बनाती है तथा शिक्षा ही मनुष्य के शरीरिक व चारित्रिक विकास के साथ-साथ मानसिक व भावात्मक विकास करती है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य ने भले बुरे की पहचान कर सृष्टि में अपनी पहचान बनायी है। शिक्षा जीवन का महत्वपूर्ण और अंधकार में डूब जाता है। असहाय मनुष्यों को निम्नतर से उच्चतर स्थिति में पहुंचाने वाली शिक्षा ही है जो जीवन में पूर्णता लाती है।

समय-समय पर अनेक विचारक दार्शनिक, मनौवैज्ञानिक, धर्मप्रचारक तथा शिक्षाविदों ने अपने-अपने शैक्षिक विचार रखे है और शिक्षा के प्रचार-प्रसार करने में प्रमुख योगदान दिया है जैसेः- डॉ. भीमराव अम्बेडकर, डॉ. राधाकृष्णन, अरविन्द घोष, महात्मा गांधी, रवीन्द्र नाथ टैगोर, लॉक, मिल्टन, जान, डीवी, स्पेन्सर तथा महात्मा गाँधी आदि। इनमें से विनोबा भावे का शैक्षिक दृष्टिकोण वर्तमान शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण है। वे शिक्षा पर सरकारी नियंत्रण के विरूद्ध थे उन्होने शिक्षा के विकेन्द्रीकरण तथा प्रत्येक गांव के उच्च शिक्षा की व्यवस्था का सुझाव दिया था। महात्मा गाँधी ने शिक्षा की नई तालीम देते हुए कहा कि सर्वोदय समाज की स्थापना तभी हो सकेगी जब हम सच्चे अर्थ मे शिक्षित होंगे। शिक्षा का आधार ही सच्चे मानव एंव आदर्श समाज की स्थापना करती है। प्लेटो की दृष्टि में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आदर्श समाज के लिए ऐसे व्यक्तियों को उत्पन्न करना था, जो किसी कार्य को सहृदयता एवं विवेक से करें। महात्मा गाँधी ने भारतीय समाज की ओर देखा। यहां भी शिक्षा में उन मूल्यों का सर्वभा अभाव है जिनके आधार पर कोई समाज एवं राष्ट्र स्वावलम्बी होकर प्रगतिशील बनता है। शिक्षा ही वह व्यक्ति है, जिसके द्वारा स्वतन्त्र एवं विचारशील व्यक्ति उत्पन्न होगे उनकी नई तालीम की नवीनता इस बात में है कि वह एक नूतन समाज का जो

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-1
January-2020

वर्ग रहित हो तथा प्रेम न्याय, सत्य और सहयोग के उच्च आदर्शो पर स्थित हो और जिसके सदस्य सामूहिक कल्याण की और अग्रसर हो- निर्माण चाहती है।

समस्या का औचित्य

मानव-जीवन में शिक्षा की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण है। जन्म से बालक पशुवत आचरण करता रहता है। उसके व्यवहार में सौन्दर्य लाने का कार्य शिक्षा करती है। शिक्षा के ही द्वारा समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है और सभ्यता के रथ को आगे बढ़ाता है। जीवन की उदारता, उच्चता, सौन्दर्य एवं उत्कृष्टता शिक्षा द्वारा सम्भव है। बालक की वैयक्तिक प्रगति उसका शरीरिक, मानसिक और भावात्मक विकास तब तक भली प्रकार नहीं हो पाता जब तक वह शिक्षा ही करती है शिक्षा किसी न किसी रूप में आदिकाल से ही जाती रही है। सर्वप्रथम शिक्षा बालक को माता-पिता द्वारा ही दी जाती थी और वे ही बालक को जीवन की विभिन्न परिस्थितियों से अवगत कराते थे। परन्तु धीरे-धीरे समाज में ज्ञानार्जन की, भावना बढ़ी समाज का स्थान गौण हो गया तथा समाज में शिक्षा ने यह दृष्टिकोण अपनाया कि शिक्षा विशेष व्यक्तियों द्वारा विशेष स्थानों पर ही प्रदान की जाये। इस प्रकार शिक्षक तथा विद्यालयों का विकास हुआ।

समय-समय पर शिक्षा के द्वारा भारतीय मूल्यों को प्राप्त करने हेतु भारत वर्ष में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक महान शिक्षाविदो का आगमन हुआ है इन दार्शनिकों ने साहित्य, संस्कृत, धर्म, दर्शन, शिक्षा जैसे क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है महात्मा गांधी की दी हुई परिभाषा बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देती है, स्वामी विवेकानन्द को पूर्णता के विकास की बात की है इस परिभाषा से यह ध्वनि निकलती है कि बालक के ऊपर बाहरी ज्ञान को थोपना नहीं है महात्मा गाँधी एक आध्यत्मिक संत के ईश्वर में उनकी अटूट निष्ठा थी वे मुर्तिपूजा के विरोधी थे महात्मा गाँधी महात्मा गांधी के आदर्शो के अनुरूप समाज की रचना करना चाहते ये उन्होने समाज के सर्वोदयी रूप की कल्पना की थी उन्होंने अध्यात्म व व्यवहार मे सामजस्य स्थापित करने का प्रयास किया थाट्स ऑन एजुकेशन नामक अपनी पुस्तक मे अपने शिक्षा सम्बन्धी विचार प्रकट किये है इसमें उन्होंने बुनियादी शिक्षा का समर्थन किया जिसमें उन्होने नेतिक मूल्यों का विशेष स्थान रखा था क्योंकि नैतिक शिक्षा मानव से प्रारम्भ होती है और उसी से उसका अंत होता है एक अत्यन्त मूल प्रश्न जो हमारे सम्मुख आता है वह है ‘‘मानव की प्रकृति क्या है।’’ क्योंकि मानव को समाज में रहना है और शिक्षा उसे अच्छा समाज निर्माण करने में सहयोग देती है दूसरा मूल प्रश्न

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-1
January-2020

यह उठ जाता है कि, ''अच्छे समाज की प्रकृति क्या है।'' इन्ही प्रश्नो के द्वारा महात्मा गाँधी ने वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में नीति परक और अध्यात्म शिक्षा का औचित्य कहां तक है समझाने का प्रयत्न किया है साथ है। वर्तमान परिदृश्य में यह शिक्षा प्रणाली लोगों के लिए किस प्रकार लाभान्वित हो सकती है। यह बतलाने को प्रयास किया है।

समस्या कथन ''महात्मा गाँधी की शिक्षा का वर्तमान शिक्षा में उपादेयता अध्ययन''

शोध के उद्देश्य: महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की विधि: ऐतिहासिक, एवं दार्शनिक शोध अध्ययन की विधि का उपयोग किया है।

महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचार

सात वर्ष की अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा:

शिक्षा सात वर्ष से तेरह वर्ष की आयु के समस्त बालक-बालिकाओं के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क होनी चाहिए। बालिकाओं के अभिभावक यदि चाहें तो तेरह वर्ष की समाप्ति पर लड़कियों की पढ़ाई छुड़वा सकते है। 1937 में सभी प्रान्तों में यह निश्चित किया गया कि प्रारम्भिक चार वर्षो तक प्रत्येक बालक के लिए अनिवार्य शिक्षा होगी परन्तु इस विधेयक को उन स्थानों पर लागू किया गया जहां नगरपालिकाएं थी। इससे केवल 10% बालक ही लाभ उठा सके तथा देहातों के 90% बालक इससे वंचित रहे। परन्तु इससे 10% बालकों को भी कोई विशेष लाभ नहीं हुआ क्योंकि चार वर्षो में बालक का पूरा विकास नहीं हो पाया इस लिए शिक्षा की अवधि कम से कम सात साल होनी चाहिए।

सात वर्ष की आयु पर शिक्षा प्रारम्भ करने का निश्चय इसलिए किया गया कि इस आयु तक बालक की इन्द्रियों का पूर्ण विकास हो जाता है और इन सात वर्षो के अध्ययन क्रम के पश्चात् वह बौद्धिक एवं शारीरिक दृष्टि से भी यह अवस्था ज्ञानार्जन के लिए सर्वश्रेष्ठ है। इसके बाद बालक अपनी रूचि के अनुसार भावी जीवन का निर्माण कर सकता है। गाँधीजी शिक्षा को एक अभिन्न, अखण्ड समष्टि के रूप में मानते थे परन्तु देश की विशिष्ट परिस्थितियों के अनुरूप सर्वप्रथम उन्होंने अपना ध्यान सात से चौदह वर्ष के बालकां की ओर लगायां इसका अर्थ नहीं कि शिक्षा के कालक्रम के अन्य विभागों के महत्व को उन्होंने अस्वीकार किया परन्तु देश मे प्रजातन्त्र के सफल होने के लिए न्यूनतम सार्वजनिक शिक्षा

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-1
January-2020

आवश्यक थी। उन्होंने कहा- ''मेरा विचार है कि इस उच्च शिक्षा का प्रश्न कुछ समय के लिए स्थगित कर सकते है। परन्तु प्रारम्भिक शिक्षा का प्रश्न एक मिनट के लिए थी स्थगित नहीं किया जा सकता।''

गाँधीजी ने कहा-शहरों के मां-बाप यदि अपने बालकों की शिक्षा सात वर्ष की आयु से पूर्व करना चाहते हैं तो उसका भार राज्य पर न डाला जाय परन्तु नियमित शिक्षा सात वर्ष से ही प्रारम्भ की जाये।

उद्योग केन्द्रित शिक्षा:

आधुनिक शिक्षाशास्त्रियों जिनमें पेस्टालॉजी, ड्यूवी आदि सम्मिलित हैं, का मत है कि शिक्षा कार्य द्वारा दी जानी चाहिए। किण्डरगार्टन, मॉण्टेसरी, प्रोजेक्ट प्रणाली सभी इस बात का समर्थन करते हैं परन्तु गाँधीजी ने कार्य का एक नया रूप प्रस्तुत किय उन्होंने कहा कि बालक जो कार्य करें, वह उत्पादक श्रम के रूप में होना चाहिए तथा सोद्देश्य होना चाहिए। इसके लिए बालक के सामाजिक एवं प्राकृतिक वातावरण से सम्बन्धित किसी केन्द्रीय उद्योग के केन्द्र मानकर सारी शिक्षा उसी के आधार पर दी जानी चाहिए। जाकिर हुसैन कमेटी रिपोर्ट में कहा गया है- ''वर्तमान शिक्षा सिद्धान्तों में यह बात सर्वमान्य है कि शिक्षा कार्य के द्वारा दी जानी चाहिए। एक अविच्छिन्न एवं सर्वतोन्मुखी शिक्षा के लिए यह विधि अत्यधिक प्रभावोंत्पादक है।'' वर्धा योजना के अनुसार जो उद्योग चुना जाय वह क्रमबद्ध रूप से तथा वैज्ञानिक ढंग से सीखा जाना चाहिए ताकि प्रयोगात्मक रूप से बालक उसमें दक्ष हो सके। उद्योग न तो बौद्धिक कार्य का साधन होना चाहिए और न स्वावलम्बन का। यह साधन एवं साध्य दोनों होना चाहिए।उद्योग के चुनाव के सम्बन्ध में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वह बालक की रूचि, योग्यता, शक्ति, सामाजिक एवं प्राकृतिक वातावरण के अनुकूल ही न हो वरन् उसकी शैक्षणिक सम्भावनाएं भी अधिक हों ताकि उसके द्वारा अधिक से अधिक विषयों का ज्ञान दिया जा सके।

इसके लिए गाँधीजी ने कताई-बुनाई व कृषि उद्योग पर अत्यधिक बल दिया क्योंकि वे जीवन की अधारभूत आवश्यकताओं, भोजन एवं वस्त्र से सम्बन्ध रखते हैं तथा उनकी शैक्षणिक सम्भावनाएं भी बहुत अधिक हैं। वर्धा योजना में उद्योग पर जो विशेषा बल दिया है उसी के कारण कुछ लोगों की यह भ्रमपूर्ण धारणा हो गयी है कि उद्योग की शिक्षा (विशेषकर कताई की शिक्षा) वास्तविक बुनियादी शिक्षा है परन्तु वस्तुतः बुनियादी शिक्षा जीवन शिक्षा है क्योंकि बुनियादी शिक्षा में ऐसे ही उद्योग का चुनाव किया जाता है जो बालक के जीवन

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-1
January-2020

सीधे सम्बन्धित हों। इस प्रकार बुनियादी शिक्षा का परोक्ष सम्बन्ध बालक के जीवन से हों जाता है, परन्तु बुनियादी शिक्षा के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह अद्योग द्वारा ही दी जाये। हमने बुनियादी शिक्षा के ऐतिहासिक विकास में यह बात मान ली है कि शिक्षा के माध्यम के लिए प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण को भी लिया जा सकता है। उद्योग, प्रकृति एवं समाज के अन्तर्गत जीवन की लगभग सभी क्रियाएं आ जाती है। इस प्रकार बुनियादी शिक्षा स्पष्टतः 'उद्योग-केन्द्रित शिक्षा' न होकर 'जीवन-केन्द्रित शिक्षा' है।

शिक्षा का स्वावलम्बी पक्ष:

गाँधीजी का मत था कि बुनियादी शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि वह बालक को उत्तरोतर स्वावलम्बन की ओर ले जाये। यहां तक कि सात वर्ष की शिक्षा के बाद बालक उद्योग में इतना दक्ष हो जाय कि वह स्वतन्त्र रूप से जीवनयापन कर सके और बेकार रहकर समाज के लिए भार न बने। साथ ही गाँधीजी ने यह विश्वास का चालू खर्च, विशेषकर अध्यापकों का वेतन निकल आयेगा। भारत जैसे गरीब देश में सार्वजनिक शिक्षा सफल बनाने का और कोई तरीका नहीं है जाकिर हुसैन कर्मटी रिपोर्ट में जहां शिक्षा के स्वावलम्बी पक्ष का समर्थन किया गया है वहां एक चेतावनी भी दी गयी है कि उसके लिए बालक के श्रम का शोषण न किया जाये और न उसके सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक विकास को रोका जाय। इसके सम्बन्ध में योजना में कहा गया है कि राज्य स्कूल-भवन, किताबें, कुर्सी-मेज, औजार व अन्य आवश्यक सामान का प्रबन्ध करे और जो उत्पादन हो उसे स्वयं अपने काम में या स्थानीय स्वायत संस्थाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के काम में ले ले। इसके बाद भी जो सामान बचे, उसे बेचने का उत्तरदायित्व भी राज्य अपने हाथ में ले और अध्यापकों का वेतन जहां तक हो सके उसी की आय से दे। यह आशा की गई कि इसके लिए कम वेतन पर त्यागी एवं निष्ठावान अध्यापक मिल सकेंगे। इसके लिए रविशंकर शुक्ल ने विद्या मन्दिर के रूप में मध्य प्रान्त मे कुछ सफल प्रयोग किये थे। गाँधीजी ने हिसाब लगाया कि चार घण्टे काम करके दो पैसा प्रति घण्टे के हिसाब से पच्चीस दिन में बालक तीन रूपये दो आने दे सकात है। औसत यदि बीस रूपये माना जाए तो बीस बालक भी अध्यापक को चालीस रूपये मासिक दे सकेंगे। बुनियादी शिक्षा के इस स्वावलम्बी पक्ष पर हम पृथक् अध्याय में विस्तृत रूप से विचार करेंगे।

शिक्षा का माध्यम मातृभाषा:

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-1
January-2020

गाँधीजी के विचारों के अनुरूप वर्धा शिक्षा योजना में स्पष्ट रूप से कहा गया कि सारी शिक्षा मातृभाषा के द्वारा दी आय परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय एवं बौद्धिक विकास की दृष्टि में एक अन्य भाषा भी सीखना आवश्यक माना गया। अतः यह बात सुझाई गयी कि- (क) जिन बच्चों की मातृभाषा और राष्ट्रभाषा भिन्न हो तो वे तीसरी श्रेणी से मातृभाषा प्रारम्भ कर सकते हैं। बुनियादी शिक्षा के संचालकों ने मातृभाषा के माध्यम से द्वारा शिक्षा देने पर इसलिए जोर दिया क्योंकि उनका विचार था कि बिना मातृभाषा द्वारा पढ़े न तो विचारों में मौलिकता आती है और न बालक में अपने विचारों को ठीक प्रकार से अभिव्यक्त करने की योग्यता उत्पन्न होती है। साथ ही विदेशी भाषा के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने में अधिक समय लगता है और व्यर्थ ही बालक के मस्तिष्क पर भार पड़ता है। सबसे अधिक हानि जो विदेशी भाषा के द्वारा शिक्षा प्राप्त करने में होती है वह है कि इसके बालकों का सम्पर्क भारतीय संस्कृति से हो जाता है। मातृभाषा द्वारा शिक्षा प्राप्त करने में बालक का परिचय भारतीय संस्कृति से हो जाता है और वे उससे प्रेम करने लगते हैं। प्रकार इसका नैतिक मूल्य भी है।

नैतिकता एवं अिंहंसा का आधार:

यह एक निर्विवाद सत्य है कि बुनियादी तालीम गाँधीजी की अहिंसा सम्बन्धी मान्यताओं आधारित है। बुनियादी तालीम एक ऐसी नवी समाज रचना की प्रेरणाशक्ति है जिसमें वर्ग शोषण, अन्याय, एवं अविश्वास न हो। जहां प्रेम एवं नैतिकता द्वारा पारस्परिक सम्बन्धों का निर्धारण हो, जहां सामजसेवा, त्याग, स्नेह, सहयोग एवं दूसरों के अधिकारों के प्रति निष्ठा की भावना हो। वह ऐसे उदार एवं स्वस्थ मानव का निर्माण करना चाहती है जिसमे एक मनुष्य दूसरे के शोषण पर जिन्दा न रहकर स्वयं साध्य हो।

नागरिकता की भावना:

बुनियादी शिक्षा के अनुसर नागरिकता का आदर्श अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वर्तमान भारत के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन का आधार लोकतान्त्रिक है। बुनियादी शिक्षा एक श्रमनिष्ठ समाज का निर्माण करना चाहती है जहां के नागरिक स्वावलम्बी हों। बुनियादी शालओं के कार्य का सामाजिक जीवन एवं उसके कार्यो से निकटतम सम्बन्ध होता है। अतः बालकों का दृष्टिकोण भी सामाजिक एवं नागरिक आदर्शो के अनुरूप प्रारम्भ से ही होना चाहिए ताकि एक पूर्ण नागरिक के रूप में वे योग्य, स्वावलम्बी, कुशल, स्वाभिमानी, संयमी एंव समाजसेवी बन सकें।

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-1
January-2020

सहयोगी समाज का विचार:

प्रारम्भ से ही बुनियादी शिक्षा में सहयोग के आधार पर विद्यालय के दैनिक कार्यक्रम को संचालित करने पर विशेष बल दिया गया है। बुनियादी शालाओं का वातावरण सहयोग, प्रेम के आधार पर संगठित किया जाना चाहिए क्योंकि बुनियादी शालाओं का वातावरण सहयोग, प्रेम के आधार पर संगठित किया जाना चाहिए क्योंकि बुनियादी शिक्षा जिस नये समाज की कल्पना करती है उसमें सामाजिक सन्तुलन सहयोग के आधार पर ही कायम रखा जा सकता है। नये आदर्श समाज का संगठन स्वार्थ एवं प्रतिद्वन्द्विता के आधार पर न होकर सहयोग के अधार पर होगा। मनुष्य स्वं जियेंगे और दूसरे को भी जीने देंगे।

निष्कर्ष

1. शिक्षा से उनका अर्थ केवल बालक में ही नहीं, वयस्क के अन्दर भी जो शारीरिक, मानसिक व नैतिक गुण है, उनका सम्पूर्ण विकास करना था, जिससे उन्होंने सम्भवतः अपनी शिक्षण सम्बन्धी परिभाषा में प्रोढ़ों की शिक्षा को भी सम्मिलित कर लिया था।

2. उन्होंने कहा था साक्षरता साध्य नहीं साधन है जिससे उन्होंने बच्चों व वयस्कों की शिक्षा के सम्बन्ध में परम्परागत धारणाओं की आलोचना की और बताया कि शिक्षा एकांगी न होकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करने वाली होनी चाहिए।

3. उन्होंने शिक्षा को माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया और विश्वास किया कि इसके द्वारा बुद्धि का अधिक विकास किया जा सकता है और सूक्ष्म से सूक्ष्म अनुभव दिया जा सकता है।

4. इसके सम्बन्ध में उनकी शिक्षण पद्धति सम्भवतः यह थी कि जब बालक उद्योग सम्बन्धी कार्य में व्यस्त हों उस समय परिस्थितियों में अनुकूल जो भी प्रसंग उठे उसके सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी उन्हें दी जाये।

5. उन्होंने कहा था कि शिल्प को वैज्ञानिक एवं शिक्षण सम्बन्धी सम्भावनाओं को अध्यापक बालकों के सहयोग से खोजे। वे नहीं चाहते थे कि शिल्प के द्वारा शिल्पकारों का निर्माण हो परन्तु शिक्षण प्रयोगशाला के अन्दर दार्शनिक और वैज्ञानिकों का निर्माण हो।

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-1
January-2020

1. समाज में फैली विकृतियों की दूर करने में महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा सहायक हो सकती है।

2. महात्मा गाँधी की शिक्षा बालकों में आत्मविश्वास बालकों में आत्मविश्वास कर्तव्य-पालन व स्वतंन्त्र चितंन जागृत कर वर्तमान की अनुकरण की समस्या को दूर करने में सहायक हो सकती है।

3. महात्मा गाँधी के शिक्षक शक्तिशाली पथ-सशोधक व अपने कार्य के प्रति निष्ठावान होने के लिए विचार वर्तमान में अत्यन्त उपयोगी हो सकते है।

4. महात्मा गाँधी के अनुसार विद्यालय ऐसा हो जो कि उद्योगपूर्ण शिक्षा प्रदान करे जिससे बालक व्यावसायिक बन सके।

5. महात्मा गाँधी के विचारों के अनुसार जीवन से जोड़कर शिक्षण कार्य करवाया जाता है तो बालक रूचि लेकर ज्ञान ग्रहण कर सकतें है।

6. महात्मा गाँधी के अनुसार विचारों में भटकाव के कारणों का निदान कर उनको स्थिर करने का विचार शिक्षा में बालक की एकाग्रता को बढ़ा सकते है।

7. महात्मा गाँधी ने अनुशासन के विचारों को शैक्षिक जगत मे प्रयोग करने पर बालकों मनोवैज्ञानिक समस्यायें समाप्त हो सकती है।

8. पाठ्यक्रम में जीविका चलाने वाली विषयों के अलावा जीवन ने सम्बन्धित विषयवस्तु जोड़ने के महात्मा गाँधी के विचारों द्वारा मनुष्य का समग्र विकास संभव है जिससे सामाजिक समस्याओं का समाधान हो सकता है।

9. आचार्य विनोबा ने शिक्षक व शिक्षार्थी दोनो को समान स्तर पर मानने पर बल दिया है। इस व्यवस्था मानने पर शिक्षक, शिक्षार्थी दोनों स्वतन्त्र होकर सम्यक् व सुचारू रूप से स्वयं कार्य सम्पन्न कर सकते है।

10. आचार्य विनोबा के अनुसार त्रिसुत्री शिक्षा देने से समाज में अनैतिकता कम हो सकती है।

शोध परिसीमन: महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारधारा तक सीमीत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-1
January-2020

1. गुप्ता, कमलेश कुमार, ''भारत की प्रेरक विभूतियां''सुरेश बुक डिपों, जयपुर-2006.
2. ओड, लक्ष्मीलाल, ''शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि'' जयपूर-राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1973.
3. पांडे, आर. एस., ''शिक्षा के मूल सिद्धान्त'' जगदम्बा पिन्टर्स- आगरा-2, तृतीय संस्करण-1981.
4. विनोबा, ''अहिंसा विचार और व्यवहार''ग्राम भावना प्रकाशन तथा गांधी शक्ति प्रतिष्ठान।
5. विनोबा, ''जीवन और कार्य'' सर्वसेवा संघ प्रकाशन राजघाट वराणसी,-1989.
6. विनोबा, ''जीवन और शिक्षण'' सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली,-1965.
7. वर्मा, वैद्यनाथ, विश्व के महान शिक्षा शास्त्री''बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना-1972.
8. Agarwal, J. C. (Complier), Gandhiji's Thoughts on Education. New Delhi: Jamia Teachers College.
9. Biswas, A.and Aggarwal. J.C., Seven Indian Educationists. New Delhi: Arya Book Depot, 1998.
10. Choudhary, Kamleswer Gandhi's Vision of Empowerment of the Scheduled Castes, Gandhi Marg, Oct.-Dev., 1999, pp. 261-282.
11. Gandhi, M. K., Towards New Education. Ahmedabad: Navjivan Publishing House, Oct., 1953.
12. Gandhi, M. K., Basic Education. Ahmedabad: Navjivan Publishing House, Fab. 1955.
13. Joshi, N. C., 'Mahatma Gandhi as a Social Reformer' Gandhi Marg, Oct,-Dec., 1998, pp. 351-355.
14. Living Thoughts of Mahatma Gandhi, New Delhi; NCERT.
15. Our Bapu. New Delhi: Diamond Pocket Books, 2000.

Copyright©authors